खतरे में है भारतीय नीला वेन्डा

डॉ. किशोर पंवार

वेन्डा एक ऑर्किड (अमरकन्द) है। ये पौधे उपरिरोही होते हैं अर्थात दूसरे बड़े पेड़ों के तनों और शाखाओं की छाल पर अपनी विशेष चिपकने वाली जड़ों के सहारे चिपके रहते हैं। ये परजीवी नहीं हैं। इन्हें सिर्फ टिकने के लिए स्थान चाहिए। खाना ये अपना खुद बनाते हैं। परजीवी तो दूसरे पौधों पर आश्रय व भोजन दोनों के लिए निर्भर होते हैं।

वेन्डा ऑर्किडेसी परिवार का एक प्रमुख वंश है। इसमें लगभग 50 प्रजातियां शामिल हैं। वेन्डा नाम संस्कृत के वनदा से लिया गया है जो लेटिन में वेन्डा हो गया। इसके फूल बहुत खूबसूरत होते हैं। वेन्डा की प्रजातियां मुख्यतः भारत के हिमालयी क्षेत्र, दक्षिण-पूर्व एशिया, इंडोनेशिया, चीन और ऑस्ट्रेलिया में मिलती हैं। इसकी पत्तियों में गजब की भिन्नता देखी जाती है - चपटी लंबी रिबन जैसी से लेकर गोल मांसल तक। पर्यावरण के हिसाब से उनमें परिवर्तन होता है।

जिस वेन्डा की यहां बात हो रही है उसे 1837 में डॉ. विलियम ग्रिफिथ ने आसाम की खासी पहाड़ियों से खोजा था। इसका वैज्ञानिक नाम है वेन्डा सीरूलिया जिसे आम तौर पर नीला वेण्डा कहा जाता है। यह ओक के पेड़ों से चिपका मिलता है। यहां ये पौधे गर्मी के सूखे मौसम और ठंड के घने कोहरे दोनों का सामना करते हैं। इस पौधे पर नीले रंग के शलभ जैसे बड़े-बड़े सुंदर फूल खिलते हैं। आसमानी नीले फूल वैसे भी प्रकृति में बहुत कम मिलते हैं। इन फूलों के रंग में भी विविधता होती है - नीले से लेकर हल्के बैंगनी तक। कुछ फूलों पर गहरे रंग की बारीक चौकड़ी भी बनी होती है। आकार में ये पौधे लगभग 120 सेंटीमीटर के होते हैं और इनमें एक बार में लगभग 20 फूल खिलते हैं। इसमें हर माह कुछ अंतराल से फूल खिलते हैं। इन फूलों की विशेषता है कि ये दो-तीन सप्ताह तक ताज़ा बने रहते हैं। उद्यानिकी के लिहाज़ से महत्त्वपूर्ण पांच ऑर्किड वंशों में से एक हैं वेन्डा। फूलों के व्यापार का बड़ा हिस्सा इसकी मदद से बनाई गई संकर किस्मों का है।

वैसे तो सभी आर्किड अपनी विशेषता एवं सुंदरता के कारण खतरे में हैं। परंतु इनमें वेन्डा सीरूलिया ज़्यादा संकट में हैं। संकट का कारण उसकी मांग एवं प्राकृतवास का विनाश है। पहले इसकी कोई कमी न थी परंतु जब से इसका युरोप को निर्यात किया जाने लगा यह विलुप्ति के कगार पर आ चुका है। विलुप्ति के इस खतरे को भांप भारत सरकार ने उसे संकटग्रस्त प्रजाति घोषित कर इसके निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया है। ब्लू वेन्डा ऐसा पहला ऑर्किड फूल है जिसके निर्यात पर प्रतिबंध लगा था। इसे खतराग्रस्त वन्य प्राणियों व वनस्पतियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की संधि (CITES) के उपबंध 1 में रखा गया है। प्राकृतिक आवास में अब यह कम ही बचा है।

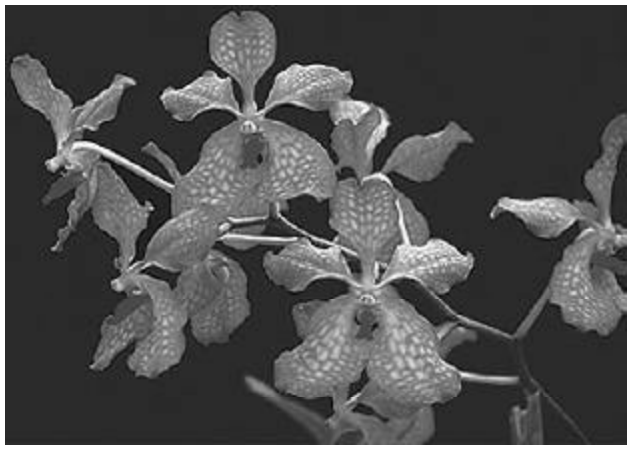

वेन्डा ओक के पेड़ों पर उपरिरोही है और यही निर्भरता इसकी प्रमुख समस्या है। दरअसल ओक के पेड़ों को जलाऊ लकड़ी और कोयला बनाने के लिए काटा जाता है। इसके निर्यात पर प्रतिबंध के बाबजूद ओक के पेड़ों की कटाई के कारण उस पर अभी भी खतरा मंडरा रहा है।

ट्रॉपिकल जंगलों की यही विशिष्टता है कि यहां का एक पेड़ सौ से ज़्यादा प्रकार के जीव-जन्तुओं और पौधों का बसेरा होता है। अतः यहां एक पेड़ कटता है तो सौ जीवों की शामत आ जाती है। वस्तुतः ट्रॉपिकल वर्षा वनों का हर पेड़ अपने आप में एक इको तंत्र होता है। इन पेड़ों का एक-एक सेंटीमीटर हिस्सा तरह-तरह के उपरिरोही, आरोही वनस्पतियों से ढंका रहता है। पेड़ों के तने की काली-भूरी छाल कहीं नज़र नहीं आती। पूरा पेड़ हरियाली से ढंका रहता है। उस पर लाइकेन्स, मॉसेस व अन्य विशिष्ट नन्हे-नन्हे पौधे चिपके रहते हैं।

हालांकि ब्लू वेन्डा ऑर्किड को उसके बीजों से नर्सरी में उगाया जा सकता है परंतु नर्सरी में खिले फूलों में जंगल में खिले फूलों-सी बात कहां। प्रयोगशालाओं में तैयार नया नीला वेन्डा भले ही बाज़ार की मांग के अनुरूप सुंदर एवं चपटा है परंतु उसमें जंगली फूलों का अंदाज़, आभा एवं पखुड़ियों में कुदरती खम नहीं है। यह वैसा ही है जैसे शेर को बचाने के लिए उसे चिड़ियाघरों में, पिंजरों में रखा जाता है परंतु असली शेर को देखने का मज़ा और रोमांच तो जंगलों में ही है। प्रकृति एवं प्राकृतिक आवास स्थलों का कोई विकल्प नहीं है। उस सुंदर संकटग्रस्त ऑर्किड को बचाना है तो उसके आश्रयदाता ओक को भी बचाना ही होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***